अध्याय -16

वानिकी शिक्षा

वन उत्पादों के लिए निरन्तर बढ़ती हुइ मांग, उत्पादकता की वृद्धि तथा उपलब्ध वन संसाधनों के अधिक सक्षम उपयोग समय की आवश्यकता हैं। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, वर्तमान प्रबन्धन पद्धतियों में सुधार तथा नई प्रौद्योगिकियां एवं दक्षताएं हासिल करना अनिवार्य हो गया है। इसलिए, वैज्ञानिक वानिकी की प्रगति के लिए वानिकी शिक्षा की भूमिका प्रमुख है। अनुसंधान एवं शिक्षा की प्रगति को बढ़ाने की दृष्टि से, मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने वन अनुसंधान संसाधन, देहरादून को दिसम्बर, 1991 में सम विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया। वानिकी शिक्षा के समन्वयन एवं सामान्य पर्यवेक्षण के लिए भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् में 1993 में एक पूर्ण शिक्षा निदेशालय सृजित किया गया।

अधिदेश :

निदेशालय के मुख्य कार्यकलाप इस प्रकार हैं :

(1) व०अ०स०-समविश्वविद्यालय का पर्यवेक्षण, जो वर्तमान में वानिकी (अर्थशास्त्र एवं प्रबन्धन) तथा काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम, रोपण प्रौद्योगिकी एवं लुगदी व कागज प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम तथा वानिकी के विभिन्न पहलुओं पर डाक्टरल कार्यक्रमों को चला रहा है।

(2) प्रशिक्षित मानव संसाधन के सृजन के लिए शैक्षिक एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था करना।

(3) वानिकी शिक्षा प्रदान करने वाले विश्वविद्यालयों को सहायता देना।

(4) शिक्षा और प्रशिक्षण पर परामर्श देना।

(5) व्यावसायिक दक्षता विकास कार्यक्रमों का आयोजन करना।

(6) विश्वविद्यालयों/स्कूलों में वानिकी शिक्षा पाठ्यक्रम का पुनरीक्षण एवं विकास करना।

(7) औपचारिक शैक्षिक माध्यम से वानिकी पाठ्यक्रम को मान्यता देना, जिससे वानिकी में डिग्री प्रदान की जा सके।

(8) अनुसंधान शिक्षावृत्तियां देना।

(9) मानव संसाधन एवं विकास कार्यकलापों का आयोजन करना।

1. राष्ट्रीय प्रशिक्षण :

आई०ए०एस०आर०आई०, नई दिल्ली में ''सांख्यिकीय पर विशेष जोर देते हुए अनुसंधान क्रियापद्धति'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम; आई०एस०आई०, बंगलौर में ''सांख्यिकीय पर विशेष जोर देते हुए अनुसंधान क्रियापद्धति'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम; अनुसंधान प्रबन्धन पर प्रशिक्षण आयोजित किए गए तथा 89 लोगों ने भाग लिया।

2. अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण :

तीन माह के प्रशिक्षण के लिए 32 नामांकनों को अन्तिम रूप दिया गया, जिसमें से चार को प्रशिक्षण दिया गया। 4 समूहों में तीन सप्ताह की अवधि के अध्ययन दौरे के लिए 29 नामांकनों को अन्तिम रूप दिया गया।

विश्वविद्यालयों को सहायक अनुदान :

स्नातक/स्नातकोत्तरों पर वानिकी प्रशिक्षण देने वाले विश्वविद्यालयों में वानिकी संकायों की अवसंरचना मजबूत करने के लिए, निम्न विश्वविद्यालयों के लिए 184 लाख रूपये की वित्तीय सहायता स्वीकृत की गई।

क्र. सं.	विश्वविद्यालय का नाम	रू० लाख में
1.	उड़ीसा कृषि विश्वविद्यालय	19.91
2.	कोंकण कृषि विश्वविद्यालय, दपोली	8.14
3.	एन०ई०आर०आई०एस०टी०	10.98
4.	वाई एस परमार विश्वविद्यालय, सोलन	25.81
5.	कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़	0.75
6.	जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय	13.30
7.	जी. बी. पन्त कृषि विश्वविद्यालय	5.22
8.	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर	24.00
9.	डा० पी. डी. कृषि विश्वविद्यालय	38.75
10.	एच. एन. बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर	30.00
11.	व. अ. सं. सम विश्वविद्यालय	7.64

पाठ्यक्रम एवं सिलेबस विकास :

राष्ट्रीय समाचार पत्रों द्वारा पाठ्यक्रम विकास पर परामर्श की दूसरी अवस्था के लिए बोलियां आमंत्रित की गई। प्राप्त बोलियों को तकनीकी रूप से मूल्यांकित करके बोली लगाने वालों के साथ समझौते किए गए। परामर्श देने के कार्य को अन्तिम रूप दे दिया गया है।

मानव संस्थान विकास योजना :

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के विभिन्न संस्थानों में विस्तृत अध्ययन करने के बाद परामर्शदाता, यथा-व्यावहारिक मानवशक्ति अनुसंधान संस्थान (आई०ए०एम०आर०), नई दिल्ली, ने अपनी पहली रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसकी जांच मानीटरन समिति द्वारा की गई और कमियां उन्हें बताई गई। उन्होंने अक्टूबर/नवम्बर, 1998 के दौरान संशोधित मसौदा रिपोर्ट प्रस्तुत किया, जिसमें दुबारा अनेकों कमियां दूर करने की अपेक्षा की गई। परामर्शदाताओं को इसमें सुधार करने के लिए कहा गया।

अनुसंधान शिक्षावृत्तियां :

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के विभिन्न संस्थानों में किए जा रहे वानिकी अनुसंधान में सहायता करने के लिए रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान कुल 158 शिक्षा वृत्तियां स्वीकृत की गई।

कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता	125
वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता	15
सह-अनुसंधानकर्ता	28

विश्व बैंक फ्री परियोजना तथा अन्य परियोजनाओं के अन्तर्गत ये अनुसंधान अध्येता और सह अनुसंधानकर्ता वानिकी के विभिन्न पहलुओं में अनुसंधान परियोजनाओं का संचालन करते है।

व०अ०सं० सम विश्वविद्यालय :

व०अ०सं० विश्वद्यिालय निम्न चार विषय क्षेत्रों में स्नातकोत्तर डिप्लोमा और डिग्री पाठ्यक्रमों को चलाने में सक्रिय रूप से जुटा है।

(i) रोपण प्रौद्योगिकी (स्नातकोत्तर डिप्लोमा)

(ii) लुगदी एवं कागज प्रोद्योगिक्री (स्नातकोत्तर डिप्लोमा)

(iii) एम. एससी. वानिकी (अर्थशास्त्र एवं प्रबन्धन)

(iv) एम. एससी. काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी।

इसके अलावा, सम विश्वविद्यालय ने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के विभिन्न संस्थानों में वानिकी के विभिन्न विषय-क्षेत्रों में डॉक्टरल और पोस्ट-डॉक्टरल अनुसंधान कार्यक्रमों को भी किया है। 1998-99 वर्ष के दौरान 45 लोगों को अन्तिम रूप से पीएच. डी. डिग्री प्रदान की गई।

विभिन्न स्नातकोत्तर डिप्लोमो और डिग्री पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों की संख्या इस प्रकार थी :

डिप्लोमा पाठ्यक्रम :

(i)	रोपण प्रौद्योगिकी में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम		20
(ii)	लुगदी व कागज प्रौद्योगिकी में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम		13

डिग्री पाठ्यक्रम

(i)	एम. एससी. वानिकी (अर्थशास्त्र एवं प्रबन्धन)	प्रथम वर्ष	23
		द्वितीय वर्ष	20
(iv)	एम. एससी. काष्ठ (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी)	प्रथम वर्ष	13
		द्वितीय वर्ष	11